Title Date Page

Geography-316

प्र01 (अ) निम्नलिखित क्षेत्रो मे तल-संतुलन का कौन सा कारक सबसे अधिक प्रभावशाली तरीके से कार्य कर रहा है।

(i) अरावली पर्वत

उ0 यहाँ पर नदियाँ तल संतुलन का कार्य सबसे अधिक प्रभावशाली तरीके से कर रही है।

(ii) तटीय मैदान

उ0 यहाँ पर समुद्र की लहरे तथा तट का उन्नयण दो ऐसे कारक है। जो तल – संतुलन का कार्य सबसे प्रभावशाली तरीके से कर रही है।

(iii) थार- मरुस्थल

उ0 यहाँ पर पवन तल संतुलन का कार्य सबसे प्रभावशाली तरीके से करता है।

(iv) दक्कन पठार

उ0 अरावली की तरह ही यहाँ भी नदियाँ ही तल संतुलन कार्य सबसे अधिक प्रभावशाली तरीके से कर रही है।

प्र02 (अ) पारिस्थितकी तंत्र मे उर्जा का प्रवाह किस रूप मे कार्य करता है।

उ0 पारिस्थितकी तंत्र मे उर्जा का प्रवाह एक स्तर से दूसरे स्तर पर स्थानातंरित होता रहता है। इसे पोषण का स्तर भी कहते है। पोषण हर स्तर के बाद 10 प्रतिशत कम होता चला जाता है। किसी भी तंत्र मे प्रथम उत्पादक पौधे होते है। अंत मे मासाहारी प्राणी होता है। उदाहरणत: प्राथमिक उत्पादक पौधे सूर्य से पोषण ग्रहण करते है। उसके पश्चात हिरण तथा अन्य शाकाहारी प्राणी पौधो ग्रहण करके

CLASSTIME

Title _____ Date _____
Page _____

पोषण ग्रहण करते हैं। तत्पश्चात अंत में अंतिम उपभोक्ता शेर या अन्य मांसाहारी जीव हिरण तथा अन्य जीवों से पोषण प्राप्त करते हैं। अतः इस प्रकार ऊर्जा का प्रवाह पारिस्थितकी तंत्र में होता है।

प्र०3 (ब) अपने क्षेत्र में पाये जाने वाले किन्हीं दो जैविक संसाधनों की पहचान कीजिये जिनका क्षरण हो रहा है। इनके क्षरण हेतु कोई दो उपाय सुझाइये।

उ० हमारे क्षेत्र में वन तथा वन्य जीव दो ऐसे जैविक संसाधन हैं जिनका क्षरण बड़े स्तर पर हो रहा है।
इनके संरक्षण के दो उपाय निम्नलिखित हैं।

① वनरोपण → अपरिपक्व तथा युवा वृक्षों को काटने से रोकना तथा लोगों में वृक्षों के रोपण तथा पोषण के बारे में जागरूकता फैलाकर हम वनों के संरक्षण में योगदान दे सकते हैं।

② वन्यप्राणी संरक्षण → वन्य प्राणियों के संरक्षण हेतु वन्य क्षेत्रों में शिकार को प्रतिबंधित कर देना चाहिये तथा "जैव मण्डल रिजर्व" एवं वन्य जीव अभ्यारण्य की स्थापना की जानी चाहिये।

प्र०4 व्याख्या कीजिये कि वैश्वीकरण ने भारत में कृषि को किस प्रकार प्रभावित किया है।

उ० वैश्वीकरण :- विचार, पूँजी, वस्तुओं तथा सेवाओं का विश्वव्यापी प्रवाह वैश्वीकरण कहलाता है। इसका प्रभाव सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है। वैश्वीकरण ने भारत में कृषि को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित किया है।

① प्रतिवर्ष विश्व स्तर पर वैश्विक बाजार में कृषि उत्पादित वस्तुओं के मूल्य में उतार-चढ़ाव होते रहते हैं। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय किसानों को इस अस्थिरता का सामना करना पड़ता है।

② समाज के विभिन्न वर्गों में तथा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के वितरण में कृषि प्रणाली एवं व्यापार वैश्वीकरण के प्रभाव से आमदनी में बहुत असमानता आ जायेगी वे क्षेत्र जो सम्पदा संपन्न हैं तथा समाज का वह वर्ग जो धनी है ये दोनों ही और अधिक समृद्ध होते जा रहे हैं।

CLASSTIME

Title ____________ Date ______

Page ______

(3) वैश्विक बाजार मे कृषि अधारित वस्तुओ की किमतो मे उछाल वैश्वीकरण का तीसरा प्रमुख प्रभाव है। कृषि पर दी जाने वाली आर्थिक सहायता राशी मे कमी कर देने से वैश्विक बाजार मे कीमतो उछाल आता है।

(4) निर्यात का बढ जाना यह वैश्विकरण का चौथा प्रमुख प्रभाव है। किमतो मे उछाल तथा आयात - निर्यात मे मौजुदा रुकावटो के दूर हो जाने से भारत मे कृषि निर्यात मे वृद्दि हो रही है।

(5) कृषि विपण्न की संभावना बढ जाना यह पाचवाँ प्रमुख प्रभाव है। जैसा कि हम जानते ही है। हमारे भारत मे कम दरो पर काम करने वाले मजदूर बहुत बड़ी संख्या मे मिलते है। कृषक इतने कुशल है। कि कृषि उत्पादित वस्तुऐ काफी कम लागत मे उत्पन्न की जा सकती है। इसलिये भारत विश्व स्तर पर कृषि विपण्न की संभावना उत्पन्न होती जा रही है।

प्र०5 (ब) भारत के रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को उपयुक्त चिन्हो द्वारा दर्शाइए और उनके नाम भी लिखिये

(i) काराकोरम श्रेणी

(ii) गोदावरी नदी

(iii) कंचनजंघा चोटी

(iv) जलोढ़ मिट्टी का क्षेत्र

CLASSTIME

Title ____________________ Date ______
Page ______

प्र०6 (ब) अपने घर या आस-पास के बुजुर्गो से चर्चा कर यह जानने का प्रयास कीजिये कि विभिन्न कार्यो हेतु जल की प्राप्ति के लिये वे किन स्त्रोतो पर निर्भर थे। यह भी पता करे कि वे पानी बचाने के लिये क्या प्रयास करते थे। प्राप्त जानकारी के आधार पर आज भी प्रयोग किये जा रहे स्त्रोतो की सूची बनाइये, उनके द्वारा पानी बचाने के तरीके क्या आज भी प्रयोग होते है। इन जानकारियो के आधार पर अपने क्षेत्र मे जल संरक्षण के उपायो पर एक प्रतिवेदन 200 शब्दो मे तैयार कीजिये।

उ० अपने घर और आस-पास के बुजुर्गो से चर्चा करने पर हमे पता चला कि वे जल प्राप्ति हेतु कुआँ, बावड़ी, तलाब, नदी, कुंडी आदि स्त्रोतो पर निर्भर थे।

(1) कुआँ → कुऐ का उपयोग वह घरेलू कार्यो जैसे :- खाना बनाने, स्नान करने आदि कार्यो मे करते थे।

(2) बावड़ी → यह तलाब के समान एक संरचना होती है। इसका उपयोग अनुष्ठानिक मे जल के लिये तथा कपड़े धोने के लिये किया करते थे।

(3) तलाब → तलाब के जल का उपयोग वह मुख्यतः कृषि मे सिंचाई के लिये किया करते थे।

(4) नदी → नदी के जल का उपयोग मुख्यो पशुओ को नहलाने तथा स्नान हेतु करते थे।

(6) कुंडी → कुंडी मे एकत्र जल का उपयोग वह पेयजल के रूप मे करते थे।

इसके पश्चात बुजुर्गो से चर्चा करने पर हमे पता चला कि वे जल संरक्षण हेतु निम्नलिखित प्रयास करते थे।

(1) कुंडी → कुंडी का निर्माण करके वह भौम-जल का स्तर बढाते थे तथा कुंडी मे वर्षा जल का संग्रहण करते थे।

(2) खड़ीन निर्माण → यह दूसरी विधि है। जो वे जल संरक्षण के लिये अपनाते थे। यह एक प्रकार का तलाब होता है। जिसमे वर्षा एकत्र करके बाद मे उसका उपयोग कृषि मे किया जाता था।

(3) जल का पुनः उपयोग → वे फल, सब्जियाँ आदि धोने के पश्चात उस जल को फेकने की बजाय उसे वे पेड़-पौधो मे डाल देते थे।

CLASSTIME

Title _____ Date _____

_____ Page _____

बुजुर्गों द्वारा जल बचाव के ये तरीके आज के समय में उपयोग में नहीं हैं क्योंकि इनका स्थान आधुनिक तकनीकों ने ले लिया है हमारे क्षेत्र में जल संरक्षण के कुछ तरीके निम्नलिखित हैं

① कृत्रिम सिंचाई विधि का उपयोग :- यह पहला तरीका है। कृषि हेतु ड्रिप - तंत्र प्रणाली का उपयोग करेंगे ताकि जल की बर्बादी न हो।

② भौमजल पुनःभरण स्त्रोतों का निर्माण करेंगे :- भौमजल स्तर बनाये रखने के लिये हम कृत्रिम पुनर्भरण स्त्रोतों का निर्माण करेंगे ताकि वर्षा जल भौमजल तक पहुंच सके।

③ बाँध निर्माण :- यह तीसरा तरीका है। बाँध बना कर हम जल एकत्र करेंगे

④ स्वयं के स्तर पर :- हम टपकते हुये नलों को बदलेंगे, कपड़े धोते तथा स्नान करते समय बाल्टी का उपयोग करेंगे साथ ही जल संरक्षण हेतु लोगों को जागृत करेंगे

CLASSTIME